مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩٠﴾ فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩١﴾ وَ اَمَّا اِنْ

दहनी त़रफ़ वालों से हो तो ऐ मह़बूब तुम पर सलाम है दहनी त़रफ़ वालों से[75] और अगर[76]

كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿٩٢﴾ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿٩٣﴾ وَّ تَصْلِيَةُ

झुटलाने वालों गुमराहों में से हो[77] तो उस की मेहमानी खौलता पानी और भड़क्ती आग

جَحِيْمٍ ﴿٩٤﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٩٥﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٩٦﴾ ع ٣ ٢٢ ١٦

में धंसाना[78] येह बेशक आ'ला दरजे की यक़ीनी बात है तो ऐ मह़बूब तुम अपने अ़ज़मत वाले रब के नाम की पाकी बोलो[79]

اٰيَاتُهَا ٢٩ ﴿٥٧﴾ سُوْرَةُ الْحَدِيْدِ مَدَنِيَّةٌ ٩٤ رُكُوْعَاتُهَا ٤

सूरए ह़दीद मदनिय्या है, इस में उन्तीस आयतें और चार रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١﴾ لَهٗ

अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है[2] और वोही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है उसी के लिये है

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ يُحْيٖ وَ يُمِيْتُ ۚ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

आस्मानों और ज़मीन की सल्त़नत जिलाता है[3] और मारता[4] और वोह सब कुछ

قَدِيْرٌ ﴿٢﴾ هُوَ الْاَوَّلُ وَ الْاٰخِرُ وَ الظَّاهِرُ وَ الْبَاطِنُ ۚ وَ هُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ

कर सकता है वोही अव्वल[5] वोही आख़िर[6] वोही ज़ाहिर[7] वोही बात़िन[8] और वोही सब कुछ

75 : मा'ना येह हैं कि ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! आप उन का सलाम क़बूल फ़रमाएं और उन के लिये ग़मगीन न हों, वोह **अल्लाह** तआ़ला के अ़ज़ाब से सलामत व मह़फ़ूज़ रहेंगे और आप उन को उसी ह़ाल में देखेंगे जो आप को पसन्द हो। **76 :** मरने वाला **77 :** या'नी अस्ह़ाबे शिमाल में से **78 :** जहन्नम की और मरने वालों के अह़वाल और जो मज़ामीन इस सूरत में बयान किये गए **79** **ह़दीस :** जब येह आयत नाज़िल हुई : ''فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّکَ الْعَظِيْم'' तो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया इस को अपने रुकूअ़ में दाख़िल करो और जब ''سَبِّحِ اسْمَ رَبِّکَ الْاَعْلٰى'' नाज़िल हुई तो फ़रमाया इसे अपने सज्दों में दाख़िल करो। (ابوداؤد) **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि रुकूअ़ व सुजूद की तस्बीहात क़ुरआने करीम से माख़ूज़ हैं। **1 :** सूरए ह़दीद मक्किय्या है या मदनिय्या, इस में चार 4 रुकूअ़, उन्तीस 29 आयतें, पांच सो चवालीस 544 कलिमे, दो हज़ार चार सो छिहत्तर 2476 ह़र्फ़ हैं। **2 :** जानदार हो या बेजान। **3 :** मख़्लूक़ को पैदा कर के या येह मा'ना हैं कि मुर्दों को ज़िन्दा करता है **4 :** या'नी मौत देता है ज़िन्दों को **5 :** क़दीम, हर शै से क़ब्ल, अव्वले बे इब्तिदा कि वोह था और कुछ न था। **6 :** हर शै के हलाक व फ़ना होने के बा'द रहने वाला, सब फ़ना हो जाएंगे और वोह हमेशा रहेगा उस के लिये इन्तिहा नहीं। **7 :** दलाइल व बराहीन से या येह मा'ना कि ग़ालिब हर शै पर। **8 :** ह़वास उस के इदराक से आ़जिज़ या येह मा'ना कि हर शै का जानने वाला।

www.dawateislami.net

عَلِيْمٌ ۝۳ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ

जानता है वोही है जिस ने आस्मान और ज़मीन छ[6] दिन में पैदा किये[9] फिर

اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ؕ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَ

अ़र्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक़ है जानता है जो ज़मीन के अन्दर जाता है[10] और जो उस से बाहर निकलता है[11] और

مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَ مَا يَعْرُجُ فِيْهَا ؕ وَ هُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ؕ وَ

जो आस्मान से उतरता है[12] और जो उस में चढ़ता[13] और वोह तुम्हारे साथ है[14] तुम कहीं हो और

اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝۴ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ اِلَى

अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है[15] उसी की है आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत और **अल्लाह**

اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝۵ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَ يُوْلِجُ النَّهَارَ فِي

ही की त़रफ़ सब कामों की रुजूअ़ रात को दिन के हिस्से में लाता है[16] और दिन को रात के हिस्से

الَّيْلِ ؕ وَ هُوَ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝۶ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ

में लाता है[17] और वोह दिलों की जानता है[18] **अल्लाह** और उस के रसूल पर ईमान लाओ और

اَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ

उस की राह (में) कुछ वोह ख़र्च करो जिस में तुम्हें औरों का जा नशीन किया[19] तो जो तुम में ईमान लाए और

اَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝۷ وَ مَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۚ وَ الرَّسُوْلُ

उस की राह में ख़र्च किया उन के लिये बड़ा सवाब है और तुम्हें क्या है कि **अल्लाह** पर ईमान न लाओ हालां कि येह रसूल

يَدْعُوْكُمْ لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَ قَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝۸

तुम्हें बुला रहे हैं कि अपने रब पर ईमान लाओ[20] और बेशक वोह[21] तुम से पहले ही अ़ह्द ले चुका है[22] अगर तुम्हें यक़ीन हो

9 : अय्यामे दुन्या से, कि पहला इन का यक शम्बा (इतवार) और पिछला जुमुआ़ है। हसन رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि वोह अगर चाहता तो त़रफ़तुल ऐन (पलक झपक्ने) में पैदा कर देता लेकिन उस की हिक्मत इसी को मुक़्तज़ा हुई कि छ[6] को अस्ल बनाए और इन पर मदार रखे। **10 :** ख़्वाह वोह दाना हो या क़त़रा या ख़ज़ाना हो या मुर्दा **11 :** ख़्वाह वोह नबात हो या धात या और कोई चीज़ **12 :** रह़मत व अ़ज़ाब और फ़िरिश्ते और बारिश **13 :** आ'माल और दुआ़एं। **14 :** अपने इ़ल्म व क़ुदरत के साथ उ़मूमन और फ़ज़्लो रह़मत के साथ ख़ुसूसन **15 :** तो तुम्हें तुम्हारे ह़स्बे आ'माल जज़ा देगा। **16 :** इस त़रह़ कि रात को घटाता है और दिन की मिक़्दार बढ़ाता है **17 :** दिन घटा कर और रात की मिक़्दार बढ़ा कर **18 :** दिल के अ़क़ीदे और क़ल्बी असरार सब को जानता है। **19 :** जो तुम से पहले थे और तुम्हारा जा नशीन करेगा तुम्हारे बा'द वालों को, मा'ना येह हैं कि जो माल तुम्हारे क़ब्ज़े में हैं सब **अल्लाह** तआ़ला के हैं, उस ने तुम्हें नफ़्अ़ उठाने के लिये दे दिये हैं, तुम ह़क़ीक़तन उन के मालिक नहीं हो ब मन्ज़िला नाइब व वकील के हो, उन्हें राहे ख़ुदा में ख़र्च करो और जिस त़रह़ नाइब और वकील को मालिक के हुक्म से ख़र्च करने में कोई तअम्मुल नहीं होता तो तुम्हें भी कोई तअम्मुल व तरद्दुद न हो। **20 :** और बुरहानें और हुज्जतें पेश करते

هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهٖۤ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى

वोही है कि अपने बन्दे पर[23] रोशन आयतें उतारता है कि तुम्हें[24] अंधेरियों से उजाले की त़रफ़

النُّوْرِؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩﴾ وَ مَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ

ले जाए[25] और बेशक **अल्लाह** तुम पर ज़रूर मेहरबान रह़म वाला और तुम्हें क्या है कि **अल्लाह** की राह में

سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ لِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِؕ لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ

ख़र्च न करो ह़ालां कि आस्मानों और ज़मीन सब का वारिस **अल्लाह** ही है[26] तुम में बराबर नहीं

مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَ قٰتَلَؕ اُولٰٓىِٕكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ

वोह जिन्हों ने फ़त्ह़े मक्का से क़ब्ल ख़र्च और जिहाद किया[27] वोह मर्तबे में उन से बड़े हैं

الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَ قٰتَلُوْاؕ وَ كُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰىؕ وَ اللّٰهُ بِمَا

जिन्हों ने बा'द फ़त्ह़ के ख़र्च और जिहाद किया और उन सब से[28] **अल्लाह** जन्नत का वा'दा फ़रमा चुका[29] और **अल्लाह** को

تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١٠﴾ مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ

तुम्हारे कामों की ख़बर है कौन है जो **अल्लाह** को क़र्ज़ दे अच्छा क़र्ज़[30] तो वोह उस के लिये

لَهٗ وَ لَهٗۤ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿١١﴾ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى

दूने करे और उस को इ़ज़्ज़त का सवाब है जिस दिन तुम ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औ़रतों को[31] देखोगे कि उन का नूर[32]

نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ بِاَيْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ

उन के आगे और उन के दहने दौड़ता है[33] उन से फ़रमाया जा रहा है कि आज तुम्हारी सब से ज़ियादा ख़ुशी की बात वोह जन्नतें हैं जिन के नीचे

हैं और किताबे इलाही सुनाते हैं तो अब तुम्हें क्या उ़ज़्र हो सकता है। **21 :** या'नी **अल्लाह** तआ़ला **22 :** जब उस ने तुम्हें पुश्ते आदम عَلَیْہِ السَّلَام से निकाला था कि **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारा रब है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। **23 :** सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर **24 :** कुफ़्रो शिर्क की **25 :** या'नी नूरे ईमान की त़रफ़। **26 :** तुम हलाक हो जाओगे और माल उसी की मिल्क में रह जाएंगे और तुम्हें ख़र्च करने का सवाब भी न मिलेगा और अगर तुम ख़ुदा की राह में ख़र्च करो तो सवाब भी पाओ। **27 :** जब कि मुसल्मान कम और कमज़ोर थे, उस वक़्त जिन्हों ने ख़र्च किया और जिहाद किया वोह मुहाजिरीन व अन्सार में से साबिक़ीने अव्वलीन हैं, उन के ह़क़ में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर तुम में से कोई उहुद पहाड़ के बराबर सोना ख़र्च कर दे तो भी उन के एक मुद के बराबर न हो न निस्फ़ मुद के। मुद एक पैमाना है जिस से जव नापे जाते हैं। **शाने नुज़ूल :** कल्बी ने कहा कि येह आयत ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़क़ में नाज़िल हुई क्यूं कि आप पहले वोह शख़्स हैं जो इस्लाम लाए और पहले वोह शख़्स हैं जिस ने राहे ख़ुदा में माल ख़र्च किया और रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की हिमायत की। **28 :** या'नी पहले ख़र्च करने वालों से भी और फ़त्ह़ के बा'द ख़र्च करने वालों से भी **29 :** अलबत्ता दरजात में तफ़ावुत है क़ब्ले फ़त्ह़ ख़र्च करने वालों का दरजा आ'ला है। **30 :** या'नी ख़ुशदिली के साथ राहे ख़ुदा में ख़र्च करे, इस इन्फ़ाक़ को इस मुनासबत से क़र्ज़ फ़रमाया गया है कि इस पर जन्नत का वा'दा फ़रमाया गया है। **31 :** पुल सिरात़ पर **32 :** या'नी उन के ईमान व त़ाअ़त का नूर **33 :** और जन्नत की त़रफ़ उन की रहनुमाई करता है।

www.dawateislami.net

تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ ۚ﴿۱۲﴾ یَوْمَ یَقُوْلُ

नहरें बहें तुम उन में हमेशा रहो यही बड़ी काम्याबी है जिस दिन मुनाफ़िक़

الْمُنٰفِقُوْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ ۚ

मर्द और मुनाफ़िक़ औ़रतें मुसल्मानों से कहेंगे कि हमें एक निगाह देखो हम तुम्हारे नूर से कुछ हिस्सा लें

قِیْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ؕ فَضُرِبَ بَیْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ

कहा जाएगा अपने पीछे लौटो[34] वहां नूर ढूंडो वोह लौटेंगे जभी उन के[35] दरमियान एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी[36] जिस में एक

بَابٌ ؕ بَاطِنُهٗ فِیْهِ الرَّحْمَةُ وَ ظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ؕ﴿۱۳﴾

दरवाज़ा है[37] उस के अन्दर की त़रफ़ रह़मत[38] और उस के बाहर की त़रफ़ अ़ज़ाब मुनाफ़िक़[39]

یُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَ لٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَ

मुसल्मानों को पुकारेंगे क्या हम तुम्हारे साथ न थे[40] वोह कहेंगे क्यूं नहीं मगर तुम ने तो अपनी जानें फ़ित्ने में डालीं[41] और

تَرَبَّصْتُمْ وَ ارْتَبْتُمْ وَ غَرَّتْكُمُ الْاَمَانِیُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَ غَرَّكُمْ

मुसल्मानों की बुराई तक्ते और शक रखते[42] और झूटी त़मअ़ ने तुम्हें फ़रेब दिया[43] यहां तक कि **अल्लाह** का हुक्म आ गया[44] और तुम्हें **अल्लाह** के हुक्म पर

بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿۱۴﴾ فَالْیَوْمَ لَا یُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْیَةٌ وَّ لَا مِنَ الَّذِیْنَ

उस बड़े फ़रेबी ने मग़रूर रखा[45] तो आज न तुम से कोई फ़िदया लिया जाए[46] और न खुले

كَفَرُوْا ؕ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ؕ هِیَ مَوْلٰىكُمْ ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِیْرُ ﴿۱۵﴾ اَلَمْ یَاْنِ

काफ़िरों से तुम्हारा ठिकाना आग है वोह तुम्हारी रफ़ीक़ है और क्या ही बुरा अन्जाम क्या ईमान वालों को

لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَ مَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ ۙ

अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाएं **अल्लाह** की याद और उस ह़क़ के लिये जो उतरा[47]

34 : जहां से आए थे या'नी मौक़िफ़ की त़रफ़ जहां हमें नूर दिया गया वहां नूर त़लब करो या येह मा'ना हैं कि तुम हमारा नूर नहीं पा सकते, नूर की त़लब के लिये पीछे लौट जाओ, फिर वोह नूर की तलाश में वापस होंगे और कुछ न पाएंगे तो दोबारा मोमिनीन की त़रफ़ फिरेंगे। **35 :** या'नी मोमिनीन और मुनाफ़िक़ीन के **36 :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि वोही आ'राफ़ है। **37 :** उस से जन्नती जन्नत में दाख़िल होंगे। **38 :** या'नी उस दीवार के अन्दरूनी जानिब जन्नत **39 :** उस दीवार के पीछे से **40 :** दुन्या में नमाज़ें पढ़ते रोज़ा रखते **41 :** निफ़ाक़ व कुफ़्र इख़्तियार कर के **42 :** दीने इस्लाम में **43 :** और तुम बात़िल उम्मीदों में रहे कि मुसल्मानों पर ह़वादिस आएंगे वोह तबाह हो जाएंगे **44 :** या'नी मौत **45 :** या'नी शैत़ान ने धोका दिया कि **अल्लाह** तआ़ला बड़ा ह़लीम है तुम पर अ़ज़ाब न करेगा और न मरने के बा'द उठना न ह़िसाब, तुम उस के इस फ़रेब में आ गए। **46 :** जिस को दे कर तुम अपनी जान अ़ज़ाब से छुड़ा सको, बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : मा'ना येह हैं कि आज न तुम से ईमान क़बूल किया जाए न तौबा। **47 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रत उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنہا से मरवी है कि नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم दौलत सराए अक़्दस से बाहर तशरीफ़ लाए तो मुसल्मानों को देखा कि आपस में हंस रहे हैं।

www.dawateislami.net

وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ
और उन जैसे न हों जिन को पहले किताब दी गई[48] फिर उन पर मुद्दत दराज़ हुई[49]

فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۱۶﴾ اِعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ
तो उन के दिल सख़्त हो गए[50] और उन में बहुत फ़ासिक़ हैं[51] जान लो कि अल्लाह ज़मीन को ज़िन्दा

الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۷﴾ اِنَّ
करता है उस के मरे पीछे[52] बेशक हम ने तुम्हारे लिये निशानियां बयान फ़रमा दीं कि तुम्हें समझ हो बेशक

الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ
सदक़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औरतें और वोह जिन्हों ने अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दिया[53] उन के दूने हैं

وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿۱۸﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖۤ اُولٰٓئِكَ هُمُ
और उन के लिये इ़ज़्ज़त का सवाब है[54] और वोह जो अल्लाह और उस के सब रसूलों पर ईमान लाएं वोही हैं

الصِّدِّيْقُوْنَ ۖۗ وَالشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ؕ وَ
कामिल सच्चे और औरों पर[55] गवाह अपने रब के यहां उन के लिये उन का सवाब[56] और उन का नूर है[57] और

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿۱۹﴾ ع اِعْلَمُوْۤا ع ۲ ۱۸
जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाईं वोह दोज़ख़ी हैं जान लो

اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي
कि दुन्या की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेलकूद[58] और आराइश और तुम्हारा आपस में बड़ाई मारना और माल और औलाद

الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ؕ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ
में एक दूसरे पर ज़ियादती चाहना[59] उस मींह की त़रह़ जिस का उगाया सब्ज़ा किसानों को भाया फिर सूखा[60]

फ़रमाया : तुम हंसते हो अभी तक तुम्हारे रब की त़रफ़ से अमान नहीं आई और तुम्हारे हंसने पर येह आयत नाज़िल हुई, उन्हों ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم इस हंसी का कफ़्फ़ारा क्या है ? फ़रमाया : इतना ही रोना। और उतरने वाले ह़क़ से मुराद क़ुरआने मजीद है। **48 :** या'नी यहूदो नसारा के त़रीक़े इख़्तियार न करें। **49 :** या'नी वोह ज़माना जो उन के और उन के अम्बिया के दरमियान था **50 :** और यादे इलाही के लिये नर्म न हुए, दुन्या की त़रफ़ माइल हो गए और मवाइज़ से उन्हों ने ए'राज़ किया **51 :** दीन से ख़ारिज होने वाले। **52 :** मींह बरसा कर सब्ज़ा उगा कर, बा'द इस के कि ख़ुश्क हो गई थी, ऐसे ही दिलों को सख़्त हो जाने के बा'द नर्म करता है और उन्हें इ़ल्मो ह़िक्मत से ज़िन्दगी अ़त़ा फ़रमाता है, बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि येह तम्सील है ज़िक्र के दिलों में असर करने की, जिस त़रह़ बारिश से ज़मीन को ज़िन्दगी ह़ासिल होती है ऐसे ही ज़िक्रे इलाही से दिल ज़िन्दा होते हैं। **53 :** या'नी ख़ुशदिली और निय्यते सालेह़ा के साथ मुस्तह़िक़्क़ीन को सदक़ा दिया और राहे ख़ुदा में ख़र्च किया **54 :** और वोह जन्नत है। **55 :** गुज़री हुई उम्मतों में से **56 :** जिस का वा'दा किया गया **57 :** जो ह़श्र में उन के साथ होगा। **58 :** जिस में वक़्त ज़ाएअ़ करने के सिवा कुछ ह़ासिल नहीं **59 :** और इन चीज़ों में मशग़ूल रहना

www.dawateislami.net

فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطٰمًا ؕ وَ فِی الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّ

कि तू उसे ज़र्द देखे फिर रौंदन (पामाल किया हुवा) हो गया[61] और आख़िरत में सख़्त अ़ज़ाब है[62] और

مَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانٌ ؕ وَ مَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَاۤ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿۲۰﴾

अल्लाह की त़रफ़ से बख़्शिश और उस की रिज़ा[63] और दुन्या का जीना तो नहीं मगर धोके का माल[64]

سَابِقُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ جَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ وَ

बढ़ कर चलो अपने रब की बख़्शिश और उस जन्नत की त़रफ़[65] जिस की चौड़ाई जैसे आस्मान और

الْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ

ज़मीन का फैलाव[66] तय्यार हुई है उन के लिये जो **अल्लाह** और उस के सब रसूलों पर ईमान लाए येह **अल्लाह** का फ़ज़्ल है

يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿۲۱﴾ مَاۤ اَصَابَ مِنْ

जिसे चाहे दे और **अल्लाह** बड़े फ़ज़्ल वाला है नहीं पहुंचती कोई

مُّصِيْبَةٍ فِی الْاَرْضِ وَ لَا فِیْۤ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِیْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ

मुसीबत ज़मीन में[67] और न तुम्हारी जानों में[68] मगर वोह एक किताब में है[69] क़ब्ल इस के कि

نَّبْرَاَهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿۲۲﴾ۚۖ لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَ لَا

हम उसे पैदा करें[70] बेशक येह[71] **अल्लाह** को आसान है इस लिये कि ग़म न खाओ उस[72] पर जो हाथ से जाए और

تَفْرَحُوْا بِمَاۤ اٰتٰىكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِ ﴿۲۳﴾ۙ الَّذِيْنَ

ख़ुश न हो[73] उस पर जो तुम को दिया[74] और **अल्लाह** को नहीं भाता कोई इतरौना (मुतकब्बिर) बड़ाई मारने वाला वोह जो

और इन से दिल लगाना दुन्या है लेकिन त़ाअ़तें और इ़बादतें और जो चीज़ें कि त़ाअ़त पर मुअ़य्यन हों और वोह उमूरे आख़िरत से हैं। अब इस ज़िन्दगानिये दुन्या की एक मिसाल इर्शाद फ़रमाई जाती है **60 :** उस की सब्ज़ी जाती रही पीला पड़ गया, किसी आफ़ते समावी या अर्ज़ी से **61 :** रेज़ा रेज़ा, येही हाल दुन्या की ज़िन्दगी का है जिस पर त़ालिबे दुन्या बहुत ख़ुश होता है और उस के साथ बहुत सी उम्मीदें रखता है वोह निहायत जल्द गुज़र जाती है। **62 :** उस के लिये जो दुन्या का त़ालिब हो और ज़िन्दगी लह्वो लअ़ब में गुज़ारे और वोह आख़िरत की परवाह न करे, ऐसा ह़ाल काफ़िर का होता है। **63 :** जिस ने दुन्या को आख़िरत पर तरजीह़ न दी। **64 :** येह उस के लिये है जो दुन्या ही का हो जाए और उस पर भरोसा कर ले और आख़िरत की फ़िक्र न करे और जो शख़्स दुन्या में आख़िरत का त़ालिब हो और अस्बाबे दुन्यवी से भी आख़िरत ही के लिये अ़लाक़ा रखे तो उस के लिये दुन्या की काम्याबी आख़िरत का ज़रीआ़ है। ह़ज़रते ज़ुन्नून رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि ऐ गुरौहे मुरीदीन ! दुन्या त़लब न करो और अगर त़लब करो तो इस से मह़ब्बत न करो, तोशा यहां से लो आराम गाह और है। **65 :** रिज़ाए इलाही के त़ालिब बनो, उस की त़ाअ़त इख़्तियार करो और उस की फ़रमां बरदारी बजा ला कर जन्नत की त़रफ़ बढ़ो **66 :** या'नी जन्नत का अ़र्ज़ ऐसा है कि सातों आस्मान और सातों ज़मीनों के वरक़ बना कर बाहम मिला दिये जाएं तो जितने वोह हों उतना जन्नत का अ़र्ज़, फिर तूल की क्या इन्तिहा। **67 :** क़ह़त़ की, इम्साके बारां (बारिश रुकने) की, अ़दमे पैदावार की, फलों की कमी की, खेतियों के तबाह होने की **68 :** अमराज़ की और औलाद के ग़मों की **69 :** लौह़े मह़फ़ूज़ में। **70 :** या'नी ज़मीन को या जानों को या मुसीबत को **71 :** या'नी इन उमूर का बा वुजूद कसरत के लौह़ में सब्त फ़रमाना **72 :** मताए दुन्या **73 :** या'नी न इतराओ **74 :** दुन्या का मालो मताअ़, और येह समझ लो कि

www.dawateislami.net

يَبْخَلُوْنَ وَ يَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ؕ وَ مَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ

आप बुख़्ल करें[75] और औरों से बुख़्ल को कहें[76] और जो मुंह फेरे[77] तो बेशक **अल्लाह** ही बे नियाज़ है

الْحَمِيْدُ ﴿۲۴﴾ لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَ اَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ وَ

सब ख़ूबियों सराहा बेशक हम ने अपने रसूलों को रोशन दलीलों के साथ भेजा और उन के साथ किताब[78] और

الْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَ اَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَاْسٌ

अद्ल की तराज़ू उतारी[79] कि लोग इन्साफ़ पर क़ाइम हों[80] और हम ने लोहा उतारा[81] इस में सख़्त

شَدِيْدٌ وَّ مَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ وَ رُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ؕ

आंच[82] और लोगों के फ़ाएदे[83] और इस लिये कि **अल्लाह** देखे उस को जो बे देखे उस की[84] और उस के रसूलों की मदद करता है

اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿۲۵﴾ ع وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّ اِبْرٰهِيْمَ وَ جَعَلْنَا فِيْ ٣ ع ٢ ١٩

बेशक **अल्लाह** कुव्वत वाला ग़ालिब है[85] और बेशक हम ने इब्राहीम और नूह को भेजा और उन की

ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَ الْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ وَ كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۲۶﴾

औलाद में नुबुव्वत और किताब रखी[86] तो उन में[87] कोई राह पर आया और उन में बहुतेरे फ़ासिक़ हैं

जो **अल्लाह** तआला ने मुक़द्दर फ़रमाया है ज़रूर होना है, न ग़म करने से कोई ज़ाएअ् शुदा चीज़ वापस मिल सकती है न फ़ना होने वाली चीज़ इतराने के लाइक़ है, तो चाहिये कि ख़ुशी की जगह शुक्र और ग़म की जगह सब्र इख़्तियार करो, ग़म से मुराद यहां इन्सान की वोह हालत है जिस में सब्र और रिज़ा ब क़ज़ाए इलाही और उम्मीदे सवाब बाक़ी न रहे और ख़ुशी से वोह इतराना मुराद है जिस में मस्त हो कर आदमी शुक्र से ग़ाफ़िल हो जाए और वोह ग़म व रन्ज जिस में बन्दा **अल्लाह** तआला की तरफ़ मुतवज्जेह हो और उस की रिज़ा पर राज़ी हो ऐसे ही वोह ख़ुशी जिस पर हक़ तआला का शुक्र गुज़ार हो मम्नूअ् नहीं। हज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ऐ फ़रज़न्दे आदम ! किसी चीज़ के फ़ुक़्दान पर क्यूं ग़म करता है येह उस को तेरे पास वापस न लाएगा और किसी मौजूद चीज़ पर क्यूं इतराता है मौत इस को तेरे हाथ में न छोड़ेगी। **75 :** और राहे ख़ुदा और उमूरे ख़ैर में ख़र्च न करें और हुक़ूक़े मालिय्या की अदा से क़ासिर रहें। **76 :** इस की तफ़्सीर में मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल येह भी है कि येह यहूद के हाल का बयान है और बुख़्ल से मुराद उन का सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के उन औसाफ़ को छुपाना है जो कुतुबे साबिक़ा में मज़्कूर थे। **77 :** ईमान से या माल ख़र्च करने से या ख़ुदा और रसूल की फ़रमां बरदारी से **78 :** अह़काम व शराएअ् की बयान करने वाली **79 :** तराज़ू से मुराद अ़द्ल है मा'ना येह हैं कि हम ने अ़द्ल का हुक्म दिया और एक क़ौल येह है कि तराज़ू से वज़्न का आला ही मुराद है। मरवी है कि हज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام हज़रते नूह عَلَیْہِ السَّلَام के पास तराज़ू लाए और फ़रमाया कि अपनी क़ौम को हुक्म दीजिये कि इस से वज़्न करें **80 :** और कोई किसी की हक़ तलफ़ी न करे। **81 :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि उतारना यहां पैदा करने के मा'ना में है, मुराद येह है कि हम ने लोहा पैदा किया और लोगों के लिये मआ़दिन से निकाला और उन्हें इस की सन्अ़त का इल्म दिया और येह भी मरवी है : **अल्लाह** तआला ने चार बा बरकत चीज़ें आस्मान से ज़मीन की तरफ़ उतारीं लोहा, आग, पानी, नमक। **82 :** और निहायत कुव्वत कि इस से अस्लिहा और आलाते जंग बनाए जाते हैं **83 :** कि सन्अ़तों और ह़िर्फ़तों में वोह बहुत काम आता है, ख़ुलासा येह कि हम ने रसूलों को भेजा और उन के साथ इन चीज़ों को नाज़िल फ़रमाया कि लोग हक़ व अ़द्ल का मुआ़मला करें। **84 :** या'नी उस के दीन की **85 :** उस को किसी की मदद दरकार नहीं, दीन की मदद करने का जो हुक्म दिया गया येह उन्ही लोगों के नफ़्अ् के लिये है। **86 :** या'नी तौरैत व इन्जील व ज़बूर और क़ुरआन **87 :** या'नी उन की ज़ुर्रिय्यत में जिन में नबी और किताबें भेजीं।

www.dawateislami.net

ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰۤى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَ قَفَّيْنَا بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَ اٰتَيْنٰهُ

फिर हम ने उन के पीछे[88] इसी राह पर अपने और रसूल भेजे और उन के पीछे ईसा बिन मरयम को भेजा और उसे

الْاِنْجِيْلَ ۙ۬ وَ جَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّ رَحْمَةً ؕ وَ

इन्जील अ़ता फ़रमाई और उस के पैरवों के दिल में नरमी और रह़मत रखी[89] और

رَهْبَانِيَّةَ ابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَآءَ رِضْوَانِ اللّٰهِ

राहिब बनना[90] तो येह बात उन्हों ने दीन में अपनी त़रफ़ से निकाली हम ने उन पर मुक़र्रर न की थी हां येह बिद्अ़त उन्हों ने **अल्लाह** की रिज़ा चाहने को पैदा की

فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ وَ

फिर उसे न निबाहा जैसा उस के निबाहने का ह़क़ था[91] तो उन के ईमान वालों को[92] हम ने उन का सवाब अ़त़ा किया और

كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٧﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ اٰمِنُوْا

उन में बहुतेरे[93] फ़ासिक़ हैं ऐ ईमान वालो[94] **अल्लाह** से डरो और उस के रसूल[95]

بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَ يَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ بِهٖ

पर ईमान लाओ वोह अपनी रह़मत के दो हिस्से तुम्हें अ़त़ा फ़रमाएगा[96] और तुम्हारे लिये नूर कर देगा[97] जिस में चलो

وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٨﴾ لِّئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا

और तुम्हें बख़्श देगा और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है येह इस लिये कि किताब वाले काफ़िर जान जाएं कि

88 : या'नी ह़ज़रते नूह़ व इब्राहीम عَلَيْهِمَا السَّلَام के बा'द ता ज़मानए ह़ज़रत ईसा عَلَيْهِ السَّلَام यके बा'दे दीगरे 89 : कि वोह आपस में एक दूसरे के साथ मह़ब्बत व शफ़्क़त रखते। 90 : पहाड़ों और ग़ारों और तन्हा मकानों में ख़ल्वत नशीन होना और सौमआ़ बनाना और अहले दुन्या से मुख़ालत़त (मेलजोल) तर्क करना और इबादतों में अपने ऊपर ज़ाइद मशक़्क़तें बढ़ा लेना, तारिक हो जाना, निकाह़ न करना, निहायत मोटे कपड़े पहनना, अदना ग़िज़ा निहायत कम मिक़्दार में खाना 91 : बल्कि उस को ज़ाएअ़ कर दिया और तस्लीस व इल्ह़ाद में मुब्तला हुए और ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के दीन से कुफ़्र कर के अपने बादशाहों के दीन में दाख़िल हुए और कुछ लोग उन में से दीने मसीह़ी पर क़ाइम और साबित भी रहे और जब ज़मानए पाक हु़ज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पाया तो हु़ज़ूर पर भी ईमान लाए। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि बिद्अ़त या'नी दीन में किसी बात का निकालना अगर वोह बात नेक हो और उस से रिज़ाए इलाही मक़्सूद हो तो बेहतर है, उस पर सवाब मिलता है और उस को जारी रखना चाहिये, ऐसी बिद्अ़त को बिद्अ़ते ह़सना कहते हैं, अलबत्ता दीन में बुरी बात निकालना बिद्अ़ते सय्यिआ कहलाता है, वोह मम्नूअ़ और ना जाइज़ है और बिद्अ़ते सय्यिआ ह़दीस शरीफ़ में वोह बताई गई है जो ख़िलाफ़े सुन्नत हो, उस के निकालने से कोई सुन्नत उठ जाए। इस से हज़ारहा मसाइल का फ़ैसला हो जाता है जिन में आज कल लोग इख़्तिलाफ़ करते हैं और अपनी हवाए नफ़्सानी से ऐसे उमूरे ख़ैर को बिद्अ़त बता कर मन्अ़ करते हैं जिन से दीन की तक़्वियत व ताईद होती है और मुसल्मानों को उख़्रवी फ़वाइद पहुंचते हैं और वोह त़ाआ़त व इबादात में ज़ौक़ो शौक़ के साथ मश्ग़ूल रहते हैं, ऐसे उमूर को बिद्अ़त बताना क़ुरआने मजीद के इस आयत के सरीह़ ख़िलाफ़ है। 92 : जो दीन पर क़ाइम रहे थे 93 : जिन्हों ने रुहबानिय्यत को तर्क किया और दीने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام से मुन्ह़रिफ़ हो गए 94 : ह़ज़रते मूसा व ह़ज़रते ईसा पर عَلَيْهِمَا السَّلَام। येह ख़िताब अहले किताब को है, उन से फ़रमाया जाता है 95 : सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم 96 : या'नी तुम्हें दूना (दो गुना) अज्र देगा क्यूं कि तुम पहली किताब और पहले नबी पर भी ईमान लाए और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और क़ुरआने पाक पर भी। 97 : (पुल) सिरात़ पर।

www.dawateislami.net

يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَیْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَ اَنَّ الْفَضْلَ بِیَدِ اللّٰهِ یُؤْتِیْهِ

अल्लाह के फ़ज़्ल पर उन का कुछ क़ाबू नहीं[98] और येह कि फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ है देता है

مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِیْمِ ﴿۲۹﴾ ع

जिसे चाहे और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है

ربع

98 : वोह उस में से कुछ नहीं पा सकते न दूना अज्र न नूर न मग़फ़िरत, क्यूं कि वोह सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान न लाए तो उन का पहले अम्बिया पर ईमान लाना भी मुफ़ीद न होगा। **शाने नुज़ूल :** जब ऊपर की आयत नाज़िल हुई और इस में मोमिनीने अहले किताब को सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ऊपर ईमान लाने पर दूने अज्र का वा'दा दिया गया तो कुफ़्फ़ारे अहले किताब ने कहा कि अगर हम हुज़ूर पर ईमान लाएं तो दूना अज्र मिले और अगर न लाएं तो एक अज्र जब भी रहेगा, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन के इस ख़याल का इब्ताल कर दिया गया।

www.dawateislami.net